गुरुवाणी

आप जिस कष्ट, जिस विचार, जिस चीज के लिए आप यहाँ पर उपस्थित हुए हैं, उसको माँ-गुरु पूरा करें।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ६, वाराणसी। सोमवार ३० मार्च २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

अवस्था

प्रकृति या सृष्टि की प्राकृतिक प्रवृत्ति गतिशीलता अथवा अवस्था परिवर्तन की ही होती है, प्रात: सूर्य के उदित होने से लेकर रात्रि प्रहर एवं अर्द्धरात्रि, ब्रह्ममुर्हुत काल की अवस्था प्रति चौबीस घंटे में निरन्तरता एवं लयबद्धता को प्रदर्शित करती है। प्रात: सूर्य की लालिमा, पूर्वान्ह एवं अपरान्ह में स्थिति परिवर्तन, अवस्था में परिवर्तन अपने आप ससमय होता ही रहता है। उसी प्रकार मनुष्य हो या कोई जीवधारी हो उसके जन्म से लेकर अवसान की अवस्था तक उसमें विभिन्न अवस्था परिवर्तन अपरिहार्य रूप से होता रहता है। यहाँ तक कि वट-वृक्ष की बीज अवस्था, अंकुरण में पादप अवस्था एवं एक काल के पश्चात् उसका घने वट-वृक्ष में परिवर्तित हो जाने को ही अवस्था परिवर्तन कहते हैं। मनुष्य योनि को मुख्यत: शैशवावस्था, बाल्यकाल, तरुणावस्था, जवानी, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था के रूप में हम पाते हैं एवं प्रतिदिन इस परिवर्तन से हम दो चार होते हैं तथा कब और कैसे अवस्था में परिवर्तन होता जाता है, पता भी नहीं चलता। ध्यातव्य है कि अवस्था परिवर्तन व्यक्ति के व्यक्तित्व में भी उसके उठने वाले विचारों से उसमें चमत्कारिक परिवर्तन आता है तथा इसी मानसिक अवस्था परिवर्तन के ही कारण एक मनुष्य दूसरे से भिन्न होता है। यद्यपि प्रकृति के द्वारा सभी सर्वाङ्गसम ही होते हैं। ठीक यही अन्तर पादप-जगत के भी, पशु जगत के भी साथ है, उसका गुण अवस्था ही प्रभावी होता है जिससे वह अन्य प्रजातियों की अपेक्षा अलग गुणधारी अथवा विषैला, हिंसक या पीड़ादायक हो सकता है। सिद्धों, ज्ञानियों, महापुरुषों की जीवन गाथा को ही हम देखें तो बचपन से या उम्र के किसी खास अवस्था से उनके विचारों, व्यवहार में एक निरन्तर परिमार्जन या परिष्कार की लौ सतत जलती रहती है जिससे उनके सानिध्य में आने वाले प्राणियों को सहज में ही एक अकल्पनीय सुख-शांति की प्राप्ति होती है जो उस महापुरुष या संत के प्रभामण्डल से अनवरत नि:सृत होता रहता है एवं आसपास के वातावरण में एवं व्यक्तियों के आन्तरिक विचारों में शुभ दृष्टि या परिवर्तन करने को सदैव तत्पर रहता है। अत: यह स्पष्ट है कि जिनका हृदय निर्मल, निर्झर, नीर की भाँति होता है वे व्यक्तियों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं, वे अपने आचार-विचार एवं अवस्था परिवर्तन से ही यह चमत्कारिक कार्य सम्पन्न करने में सफल होते हैं। इसके लिए बड़े ही यत्न एवं प्रयत्न से एक एक कदम बढ़ाने पड़ते है। महात्मा गाँधी के ही जीवनगाथा को हम लें तथा बाल्याकाल से लेकर उनके अन्तिम अवस्था तक का सम्यक् अध्ययन अवलोकन करें, तो हम देखते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ ही साथ बदलती परिस्थितियों में उनमें कैसा परिवर्तन आया? सामान्य गाँधी से वे महात्मा गाँधी तब हुए जब उन्होंने भारत में एक बेबश नवयुवती को फटे पुराने मैले कुचले वस्त्र में देखा एवं पूछने पर उसने जब अपने घोर अर्थाभाव का संक्षिप्त विवरण दिया तो गाँधी जी का हृदय परिवर्तन हुआ तथा उसी समय से वे एक ही धोती को फाड़कर पहनने एवं ओढ़ने लगे। यद्यपि आज भी कम से कम हमारे देश में तो भयंकर रूप से अवस्था की दुर्व्यवस्था देखने को मिलती है। महानगरों में जहाँ एक ओर गगनचुम्बी अट्टालिकाओं में वातानुकूलित वातावरण में एक बड़ी आबादी साँस ले रही है वहीं उससे भी बड़ी आबादी, झोपड़पट्टी में गंदगी में, बीमारी में कुपोषण में जीने के लिए बाध्य है। एक ही समाज में आर्थिक असमानता एवं ईमानदार नीति का अभाव रहने का कुपरिणाम सदियों से भारतवर्ष झेलता आ रहा है तथा यहाँ के समस्त वासियों को समानता का संविधान सम्मत अधिकार के बावजूद आज भी उन्हें कुपोषण एवं अभाव की जिन्दगी में इसलिये जीना पड़ रहा है कि पढ़े-लिखे अधिकाधिक मनुष्यों के सोच की अवस्था में तात्विक परिवर्तन नहीं हो सका है। जिससे राष्ट्र भारत की अवस्था में भी आशातीत, व्यापक परिवर्तन नहीं हो सका है। यद्यपि पूर्व की अपेक्षा कुछ सुधार अवश्य हुआ है परन्तु अभी भी काफी सुधार की अपेक्षा है, जो प्रत्येक भारतीय नागरिक के मानसिक उन्नयन एवं सोच की अवस्था के परिवर्तन से ही संभव है।

विशेषत: मानव का अवस्था परिवर्तन उसके वय के साथ ही साथ मस्तिष्क का भी सकारात्मक दृष्टि से होना श्रेयस्कर है, जिससे अपने अल्प जीवन में उसे उस अकल्पित आनन्द की प्राप्ति होगी जो सामान्य जन, लापरवाह या पुरुषार्थ न करने वाले के लिये जीवन भर दिवास्वप्न की भाँति ही बनी रहती है तथा अन्तता वे शरीर त्याग कर जिन्दगी को अकारथ ही व्यतीत कर अफसोस के भागी बनते हैं यानी व्यक्ति के भाव विचार ही उसकी अवस्था को दर्शाता है, तथा यही कारण है कि किसी को सज्जन एवं किसी को दुर्जन की उपाधि मिलती है। "सकल पदारथ ऐही जग माही" कर्महीन नर पावत नाही" की श्रेणी में वही आते हैं जिनकी शारीरिक अवस्था परिवर्तन के साथ-साथ अपेक्षित मानसिक अवस्था में परिवर्तन, परिवर्द्धन नहीं होता बल्कि वे थोथी मायावी, भौतिक पदार्थों की ओर अग्रसर हो अपने जीवन के समय को कौड़ी में बदल लेते है। यदि किसी व्यक्ति की स्थिति ओछे, अधम, परनिन्दक, कुलनिन्दक की होती है तो उससे उसके द्वारा कृत विचारों के अनुरूप कार्य रूप में परिणित होकर ही एक घटिया, अवांछनीय किस्म की स्थिति हो जाती है, ऐसे व्यक्ति समाज में तिरस्कृत उपेक्षित होने के लिए बाध्य होते हैं।

अघोर पंथ के संविधान के रूप में मान्यता प्राप्त "अघोर वचन शास्त्र" के पाँचवे अध्याय में इसीलिये बड़े सरकार परम पूज्य भगवान राम जी के द्वारा "अवस्था" को अध्यायों के मध्य एक सौ आठ बिन्दुओं में समाहित किया गया है जिसमें मनुष्य के संस्कार पर काफी जोर दिया गया है। मनुष्य का अर्थ अघोर परम्परा में मानव से ही होता है न कि ओछी प्रकृति व्यक्तियों द्वारा मानव को हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई एवं अन्यान्य पंथों, धर्मों, सम्प्रदायों में बाँटकर देखने से। क्योंकि समष्टि का अनुभव सामान्यत: सभी को है। सभी प्राणी एक ही जलवायु, आकाश, पृथ्वी, वायुमण्डल में प्राकृतिक रूप से निवास करते हैं एवं जीवन-यापन करते है, परन्तु भेदबुद्धि के कारण आज विश्व में एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड़, धर्म सम्प्रदाय विशेष में ही ईश्वर का स्थान होने के आभासी मिथक में समाज उलझा पड़ा रहता है। वास्तव में अच्छी सुगन्ध, अच्छी वायु का झोका सभी लोगों को आत्मिक प्रसन्नता प्रदान करता है जबकि इन वस्तुओं को छूकर या देखकर नहीं पहचाना जा सकता, लेकिन अकाट्य अनुभव, मूक भाव से सभी समान रूप में तृप्ति पाते हैं।

अत: अवस्था ही मनुष्य को दु:ख या सुख देती है यदि हमारी मानसिक अवस्था अपने स्वयं के द्वारा किसी लिये गये संकल्प को पूर्ण करने की नहीं है तो वह व्यक्ति

शेष पृष्ठ दो पर

अघोर-अध्यात्मिकता

अध्यात्मिकता का पर्यायवाची नैतिकता, धार्मिकता तथा मानव जीवन की सार्थकता को ठहराया जा सकता है। मानव चाहे पृथ्वी के किसी अंशभाग पर निवास करता हो, वेश-भूषा, वातावरण, रहन-सहन, बोलचाल की भाषा चाहे जो हो, परन्तु वह हार्दिक रूप से, एक मूक अदृश्य अनुभव, संवेदनशीलता, करुणा का समान भाव लेकर पैदा होता है। वह कालान्तर में अपने कर्मों, दायित्वों के प्रति अपने कृत व्यवहार, क्रियान्वयन से अपने को एक श्रेणी के अन्तर्गत आच्छादित कर लेता है या तो वह अपने को, अपने परिवार, समाज या राष्ट्र के हित में तराश कर तथा योग्य बना लेता है अन्यथा अनगढ़ पत्थर की अवस्था में चलते-फिरते मानव का पुतला ही बना रहता है एवं अन्ततोगत्वा नाशवान शरीर से मुक्त हो जाता है।

सौभाग्य से अपना राष्ट्र भारतवर्ष इस संदर्भ में प्राचीन कालसे ही सम्पदा सम्पन्न रहा है। इस धरती पर सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं आज कलियुग में भी सिद्ध हस्तियाँ मानव एवं मानवता के उद्धार हेतु सतत प्रकट होती रहती है तथा प्राणियों के हित-लाभ, जिसे भारतीय दर्शन में अर्थ, धर्म, काम मोक्ष कहा गया है से भी उच्चतर स्थिति को प्राप्त कराने, हस्तगत कराने हेतु उपलब्ध है। बस जरूरत है अपने मनोभाव, मनोवृत्ति या मस्तिष्क को उस स्तर परले जाकर स्थिर चित्त होकर, श्रद्धाभाव से, विनीत भाव से, भ्रमर की भाँति आकर्षक सुबासित खिले हुए सुगन्धित फूल के रसास्वादन की। जो भी व्यक्ति ऐसी मनोवृत्ति विकसित कर लेने में सक्षम होते हैं, उन्हें अन्य उच्चकोटि की साधना करने की जरूरत नहीं रहती बल्कि वे निर्मल भाव से सर्वेश्वरी के कृपा पात्र बनते हैं तथा औघड़, अघोरेश्वरों द्वारा सहज में ही गोद ले लिये जाते हैं तथा ऐसे सौभाग्यशाली व्यक्तियों की धारण-क्षमता, सरलता के साथ स्वयं ही बढ़ती रहती है, वे सदाशयता के पालनकर्ता, साधारण सी बातों में उद्वेलित अथवा उत्तेजित नहीं होते बल्कि वे समान चाल के लम्बे धावक होते हैं। अघोरेश्वर के शरण में आया व्यक्ति कभी आलसी, निकम्मा, कामचोर, परनिन्दक अथवा ज्यादा बड़बोलेपन काला हो ही नहीं सकता। अघोर के सच्चे साँचे से निकला मानव अपने ब्रांड को सदैव उत्कृष्ट बनाये रखता है। क्योंकि अघोर दर्शन में सदा सरल, सीधा, आसान का ही आश्रय लिया जाता है हालांकि सरल होना, सीधा होना, कामयोग्य बनना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। यह भी सर्वविदित तथ्य है कि अपने कुकर्मों या सत्कर्मों का फल हमें अलग-अलग भोगना पड़ता है परन्तु एक सुविधा यह है कि औघड़ के दरबार में अघोरेश्वर अनुयायियों के बुरे कार्य भी अच्छे कर्म में बदल जाते हैं यही निष्कृष्टता को बदलकर उत्कृष्टता में सदा सदा के लिये परिवर्तित कर दिया जाता है,वह व्यक्ति अपने को हर हालत में संतुष्ट, सुखी, निरहंकार एवं योग्य सिद्ध करता रहेगा बशर्ते वह मन, कर्म, वचन से औघड़ का सच्चा अनुयायी हो। यहाँ छिपाने के लिये कुछ भी नहीं होता, बल्कि अयस्कों से अशुद्धियों को अलग-थलग कर मानव रूपी धातु को शुद्ध रूप में परिवर्तित कर देने का परिपालन होता है, व्यक्ति अपने जीवन के जिस अवस्था, जिस कालखण्ड, स्थान का हो वह अपने कार्य को बड़ी ही सलीके से बड़े ही तन्मयता से सम्पन्न कर लेता है तथा गृहस्थों को तो यहाँ विशेष सुविधा मिली होती है जहाँ वे अपने रोजमर्रा के दायित्वों का निर्वहन करते हुए एक अत्यन्त विलक्षण, विश्वसनीय जीवन जीने का अधिकृत होता है, वर्तमान में वो व्यक्ति चाहे झोपड़ी का निवासी हो अथवा महलों में निवास करें। उसे संतुष्टि,मस्ती समान रूप में प्राप्त होती है, जिससे व्यक्ति अपने आत्मोत्कर्ष की तरफ अग्रसर हो जाता है, वह छोटी-छोटी बातों से अपने को अलग करता हुआ नैसर्गिक सुख सामर्थ्य का स्वामी बनता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

अवस्था

स्वयं की दृष्टि में अधम, गिरा हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि वह व्यक्ति अपने मन की आवाज की अपेक्षा अपनी आत्मा की आवाज को महत्व नहीं देता। प्रतिदिन या प्रतिपल व्यक्ति को आपने दिन भर के किये गये कार्यों की समीक्षा स्वयं करके अपना आत्मपरीक्षण ईमानदारी से स्वयं ही चौबीस घंटे में एक बार अवश्य करना चाहिए कि क्या आज का चिन्तन, मनन, उसके कर्तव्य उसके मानसिक अवस्था के उन्नयन, उसके विकारों के समन करने में सक्षम रहा है? हम सभी स्वयं के साथ न्याय करें। हममें से अधिकांश लोगों की बुरी आदत होती है, आवश्यकता से अधिक बोलना, अथवा दिखावा करना तो यह समझना चाहिए जो व्यक्ति आवश्यकता से अधिक बोलता है दिखावा करता है, वास्तव में वह वह नहीं है, जिसे परोक्ष रूप में उसने सिद्ध करना चाहा है, अन्यथा कोई वास्तविक सिद्ध संत, महात्मा, उच्चकोटि का विद्वान, वैज्ञानिक कभी भी आत्मश्लाघा के शिकार नहीं होते, क्योंकि उनके सद्गुण उनकी प्रवृत्ति, उनके व्यक्तित्व से स्वमेव झलकती रहती है। उस विकिरण को उनके सानिध्य में आने वाले व्यक्ति बखूबी समझ जाता है तथा तन्मयता से उनकी वाणी को उनके कृत्यों को हृदयांगम कर लेता है, सामान्य जन उनके व्यवहार में निर्मलता, स्पष्टता, गंभीरता को देखकर चुम्बकीय आकर्षण का अनुभव करते हैं।

अब विचारणीय प्रश्न यह है कि अपने मानसिक अवस्था में हम ईमानदारी से कैसे परिवर्तन करें कि हम उत्कृष्टता की कोटि में सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त कर सके। तो यह बड़ा ही सरल है बशर्ते हम आप इस पर हृदय से गौर करें, औघड़, अघोरेश्वर की वाणियों, सत्संग, विचार श्रवण करने के लिये अपनी चित्त की अवस्था को हम यदि तद्नुकूल करें। हमारे अन्दर एकान्त भाव से एकाग्रता की सम्पुष्टि हो एवं हमें आनन्द भगवान की निर्विकार भाव से उपासना से प्राप्त होता रहे। अन्यथा यह सत्य है कि हम स्वयं के ही कर्मों से पदच्युत होकर कई दुर्लभ अवसर खोते रहते हैं जो पुन: लौटकर नहीं आता। अत: मानसिक विकारों से मुक्ति के लिये, समाज परिवार को स्वयं के साथ ही सुखी बनाने के लिये हम आप अघोरेश्वर की कृपा के पात्र बने तथा उनकी आभा के प्रकाश को सभी जनों में ईमानदारी से फैलावे, हर जन का कल्याण होगा।

हर हर महादेव

विभिन्न शाखाओं में सम्पन्न हुआ चैत्र नवरात्र अनुष्ठान

नौरात्र का व्रत विगत दिनांक 21 मार्च से 29 मार्च 2015 तक स्थल में कार्यरत संस्था अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के अन्तर्गत कार्यरत सभी शाखाओं में बड़े ही उत्साह एवं सादगी भरे वातावरण में साधकों द्वारा मनाया गया।

क्रींकुण्ड स्थल में अष्टमी को पीठाधीश्वर जी परमपूज्य सिद्धार्थ गौतम राम जी के सान्निध्य में शृंगारित कुँवारी कन्याओं का पूजन कर उन्हें फल पकवान खिलाये गये। सभी साधक एवं साधिकाओं ने बाबा का भी दर्शन कर अपने को कृतार्थ किया।

अघोर निष्ठालय शाखा नारंग, मैलानी (लखीमपुर खीरी) के भी आश्रम एवं जंगल में साधकों द्वारा नवरात्र व्रत एवं अनुष्ठान सम्पन्न किया गया महाअष्टमी तिथि को कुँवारी कन्याओं को शृंगारित कर पूजन किया गया एवं पकवान फल, मिष्ठान का भोग लगवाया गया और देवी गीत के मध्य उपस्थित श्रद्धालुओं द्वारा पावन प्रसाद ग्रहण किया गया। अनुष्ठान के अन्त में अघोर पद्धति से पूर्णाहुति कर विसर्जन भी सम्पन्न हुआ। स्थानीय जनता के साथ ही विभिन्न जनपदों से भी श्रद्धालुओं ने इस अवसर पर दर्शन पूजन में भाग लेकर अपने को निहाल किया।

इसके अतिरिक्त उ0प्र0 में कार्यरत विभिन्न शाखाओं यथा लालगंज (आजमगढ़), जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, बलरामपुर, बसखारी (अम्बेडकर नगर), रायबरेली, गोरखपुर, फैजाबाद, महाराजगंज, कुशीनगर, रेनुकूट (सोनभद्र), बिहार प्रान्त में भोजपुर, गुंडी, मोहनियाँ, सासाराम, अहिनौरा, औरंगाबाद, पटना आदि। झारखण्ड में अवस्थित शाखायों राँची, धनबाद, बोकारो, जमशेदपुर, गुमला, सिमडेगा, डाल्टेनगंज, नगर उटारी, गढ़वा, जपला आदि। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की सभी शाखाओं में जैसे विलासपुर, कुड़मकेला, रायगढ़ के साथ ही मुम्बई, गोवा एवं दिल्ली अवस्थित शाखाओं से भी नवरात्र व्रत एवं अनुष्ठान की सफलतापूर्वक सम्पन्नता की सूचना प्राप्त हुई है।

अवधूत गंगा अघोराचार्य के सिर से सद्भाव रूप में समभाव से प्रवाहमान है

दुविधा द्वैत अद्वैत बन समाहृत हो जाता है कपाल खप्पड़ में।

कालों के काल अकाल पुरुष है कालू-कीना सत्य शिव सुन्दर अवधूत भगवान हैं। सर्वसिद्धि प्रदाता, नरवेश में विधाता क्रींकुण्ड के स्नाता बाबा गौतम सुखधाम हैं। भस्मी धुनी की धुँआ पाप कर्म का है नाशी- अविनाशी गुरु गौतम का निवास श्मशान है।

कलिकाल की करालता से कराह रही मानवता का करुण क्रन्दन जब व्योम में व्याप्त औघडेश्वरीय दिव्यात्माओं तक पहुँची थी। शैव, शाक्त, वैष्णवी, महायान, हीनयान, दिगम्बर, श्वेताम्बर भेदबुद्धि के वाहक बन बैठे थे। मध्यकालीन मानव कर्ता, करीम, राम रहमान, रहीम कृष्ण करीम संज्ञा में अभेद की तलाश कर रहा था। जेहाद, क्रूसेड के तहत नर मेघ के पैशाचिक ताण्डव से त्रस्त भारत हेतु-हेतु मद्भूत में जी रहा था। ऐसे विषम काल में विषपायी महाकाल शिवस्वरूप अघोरी बाबा कीनाराम विषमता के विष बेल को श्मशान की अधजली लकड़ी की धुनि जलायी और त्रितापनाश की रुद्राग्नि प्रज्वलित की। बहरहाल, १५वीं शताब्दी के अघोराचार्य के शिश से निरन्तर प्रवाहमान अघोर गंगा अब तक अद्य नाशक बनकर शिवोऽमं। भैरवोऽम। रुद्रोऽमं कीटेक लगा रही है। कीनारामी समता की थाल में सांस्कृतिक अध्यात्मिक, राष्ट्रीयता व मानवता की थाती को वर्तमान पीठाधीश्वर महाकपालिक बाबा सिद्धार्थ गौतम रामजी संजोए हुए हैं और अघोर पथ को प्रकाशित कर रहे हैं।

पंच तत्व की प्रतीक है अघोराचार्य की कालजयी कृतियाँ : महाराज श्री कीनाराम प्रणीत, राम गीता, राम रसाल, गीतावली, उन्मुनी राम एवं 'विवेक सार' न सिर्फ पंच तत्व के प्रतीक हैं बल्कि पाँच वृत्तियों के प्रतीक हैं। जे०पी० विश्वविद्यालय सारण (बिहार) के अवकाश प्राप्त आचार्य डॉ० राजेश्वर सिंह, राजेश ने अघोराचार्य में तुलसी की दास्य भक्ति, साख्य भक्ति, कबीर का ज्ञान मार्ग एवं सूफी संतों के प्रेममार्ग को रेखांकित किया है।

तुलसी कबीर व नानक के समन्वय : एकादश रुद्र के प्रतीक 'रामरसाल' अघोराचार्य की कृति का श्रीगणेश चंचरिक छन्द से एकदंत विनायक से हुई है। तुलसी दास ने भी 'प्रथम पूजित नाम प्रमाउ' से वंदना की है। फिर कौशलेन्द्र राम का स्मरण कर आगे बढ़ते हैं, जबकि कबीर 'दाशरथी राम' के ऊपर की बातें कर 'रहस्यवाद' का सृजन कर देते हैं। बाबा कीनाराम जी के सगुण से निर्गुण, द्वैत से अद्वैत एवं घोर से अघोर रास्ता दिखलाया है। गोस्वामी जी के शब्दों में—

फूलहिं कमल सोह कर कैसे?
निरगुण ब्रह्म सगुण भए जैसे।

भैरों ने शिव स्तुति फिर एकादश रुद्र महावीर का स्मरण करते हुए 'गीतावली' का प्रारंभ सर्वव्यापी राम नाम व दोहा छन्द से बाबा ने की। २८ छन्द वाले गीतावली में संख्या २८ का मूलांक (२+८=१०) है, जो १० कामेन्द्रियों को केन्द्रीयकृत कर रामभक्ति का सीधा संकेत है- **'दिल की दुरमति गिरि गई, भयी राम सो नेह।'** **'वन्दे कर खेती हरि नाम की, एवं कबीर का फतवा राम नाम कर खेती रे मन'** में साम्यता देखी जा सकती है।

दशरथी राम से सर्वव्यापी राम की ओर संकेत– राम रसाल में जहाँ अघोराचार्य ने सगुण दशरथी राम की प्रधानता के साथ गीतावली निर्गुण सर्वव्यापी राम का संकेत दिया है- **'जपै निरंजन राम।'**

सम्प्रदायिक समन्वय– अघोराचार्य कालीन भारत घोर संक्रमणता से गुजर रहा था। उत्तर भारत में शासक पंथ इस्लाम एवं दक्षिण भारत के समुद्रतटीय प्रदेश मसीही मिशनरियों के 'कल-बल, छल' से आक्रान्त था। ईसा पूर्व छठीं शताब्दी में भगवान तथागत बुद्ध ने 'ब्राह्मणवाद' के विरुद्ध संघर्ष किया तो १५वीं शताब्दी में बाबा कीनाराम ने पाखण्ड धर्माचरण धर्मान्तरण, हिंसा, बलि, भौतिकता को धत्ता बनाने हुए बहिष्कार का प्रतिकार एवं परिष्कार व सनातन संस्कार पर बल दिया— **'तुम तो पूरन ब्रह्म था, चाह न होती बीच'**

सूफी मत से समन्वय– सूफी मत का प्रेम मार्ग 'राम गीता' का ५८ छन्दों में देखा जा सकता है। **'इश्क मजाजी'** की नजर अन्दाजगी और 'इश्क हकीकी' की ताजगी अघोराचार्य के साहित्य वाग्मय में देखा जा सकता है—

सांई दा नाम जपदा यारों काम सख्त मुश्किल है।
चश्मो दी चश्म हुजूर नूर सोइ चौक प्रेमदाना दिल का है।
हाजिर हर वक्त दिल भीतर रहनि रहंदा है।
अली दरवेश मरहमी हालों का कीनाराम बंदा है।

वेद, पुराण, कुरान में एक ही अजना– कीनारामी अघोरई में आदि शंकराचार्यमत 'ब्रह्म सत्य जगतमिथ्या, मंसूरी मत 'अनहक-हक' तुलसी का विशिष्टता द्वैत 'चहुँ जुग श्रुति नाम प्रमाउ' कलाम एक पाक' कुरान मजीद का ला इल्लाह सल्ललिल्लाह, बाइबिल का डिवाइन लाइट का घोल बन पड़ा है। सर्वपंथ के लिये सुरुचिकर एवं सुपाच्य है। उर्दू, फारसी, पंजाबी, शब्द जल में गंगा-यमुनी संस्कृति धारा बह रही है- **'फिकर छाड़ि दे, जिकर किया कर अजब रंगिला मौला है।'** आदि शंकराचार्य 'भज गोविन्दम् भज गोविन्द मूढ मते' से भी आंचलिक क्षेत्रों में कीनारामी भजन 'भज मन नारायण-नारायण' भक्तों के मुख पर है।

अद्वैत, अन-अल-हक एवं विशिष्टाद्वैत– गिरनारी औघड़ पंथ के प्रणेता पथिक-पथ प्रदर्शक बाबा कीनाराम जी ने 'उन्मुनी राम' के मात्र ९ छन्दों में शंकराचार्य के अद्वैत मंसूर का अन-अल हक एवं रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत की नौधा भक्ति रूप में रूपायित की है।

सम्पूर्ण विवेकसार के महज ४४ छन्दों में आदि अवधूत भगवान दत्तात्रेय स्तवन, गुरु शिष्य संवाद, ब्रह्म, जीव जगत आदि अनादि सृष्टि का एलबम प्रतीत होता है। सच तो यह है कि वैष्णव, शैव एवं शाक्त पंथों की पंथिक एकता एवं दर्शन का समन्वय स्थल है कीनारामी अघोर संत पथ। २०वीं शताब्दी के महान अघोर संत कीनाराम स्वरूप अघोरेश्वर महाप्रभु भगवान राम के बाद कीनारामी गद्दी पर आसीन महाकपालिक योगेश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम समता की थार में भक्ति, योग, वैराग्य, शंभु प्रसाद अघोर भक्तों को प्रदान कर रहे है।

साहित्यिक इतिहासकारों ने किया नजर अन्दाज– सिद्ध व नाथ साहित्य में सिद्धेश्वर कीनाराम के भक्ति साहित्य कोश की ओर इतिहासकारों का ध्यान नहीं जाना आश्चर्य का विषय है। 'इस्तवार द ला लिटरेच्यू एन्दू एंद एन्दुस्तानी' के रचयिता तासी द गार्सा' डॉ० जॉर्च ग्रियर्सन एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक पं० रामचन्द शुक्ल, पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों की नजर कैसे नहीं गई कीनारामी साहित्य पर? प्रगतिवादी साहित्यवेत्ताओं ने भी नजर अन्दा किया। जबकि 'काशी-हिन्दू विश्वविद्यालय' एवं कीनाराम स्थली की दूरी महज एक से डेढ़ किमी है। बहरहाल, अघोरेश्वर महाप्रभु द्वारा १९६१ में गठित सर्वेश्वरी समूह एवं १९९८ में क्रींकुण्ड पीठाधीश्वर द्वारा गठित अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के संयुक्त प्रयास एवं समूह के वर्तमान अध्यक्ष एवं पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम द्वारा ज्ञान-रश्मियों के प्रस्फुरण के प्रभाव से पूरा विश्वव्यापी होता जा रहा है।

परमार अखिलेश

चौथे पृष्ठ का शेष

लिये प्रयत्नशील हैं और तरह के मनुष्यों के लिये नहीं। उनके ऊपर तो ऐसी लाइट पड़ती है कि जीवन अस्त होता रहता हैं, निरर्थकता बढ़ती रहती है। वह व्यक्ति अपने आपसे भी ऊब जाता है।

तो मैं कहूँगा कि आप पर उन ग्रहों का बड़ा ही अच्छा प्रभाव है। आप दूर नक्षत्रों पर रहने वाले आत्माओं से सम्बन्ध जोड़ रहे हैं। पूछ रहे हैं इस इष्ट के यहाँ पहुँचने के लिये मार्ग। वे अवश्य मार्ग देंगे। अंगुली पकड़कर सही रास्ते पर ले जायेंगे। यह वही दिन है जिसका आज प्रारम्भ हुआ। वह हमारे सामने नवरात्रि के रूप में है। आज नाना प्रकार के कर्मों से हम निवृत्त हैं।

समाधि चित्त ही साधक की चरम उपलब्धि

आज हम स्वच्छ हैं, आज हमारे सामने सिर्फ वही कर्म रह गया है जो नक्षत्रों द्वारा प्रशस्त मार्ग पर अपने सहज समाधि तक अपने इष्ट तक पहुँचायेगा। इसलिये मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आपमें तन्मय रहें। जाप हमारे हृदय मन को बड़ा निर्मल, स्वच्छ और बलवान बनाता है। हमारी कामनाओं की पूर्ति करता है, हमारे मनुष्य जीवन के लिये एक नयी व्यवस्था देता है। इस व्यवस्था में व्यवस्थित होकर हमें जिस तरह जीना चाहिये, उस तरह हम जोते हैं। मंत्र का बहुत बड़ा प्रभाव है। जैसे इमली का नाम लेने से उसकी शक्ल सामने आ जाती है। पाँच बार उसका नाम ले लेने से मुँह में लार आने लगता है। यदि इमली रटते-रटते लार आने लगता है तो आध्यात्मिक शब्द के रटने से हमारी भावनायें क्यों नहीं उच्च होंगी? अवश्य ही नयी रोशनी नई प्रेरणा अपने आप में उपलब्ध होती है। आपने आगे का भी पुरुष का उदाहरण देते हुए कहा कि वह सपने में अचिन्त्य अवस्था में अपनी भावनाओं द्वारा सुन्दर स्त्री का स्पर्श कर लेता और उसका अवस्था को भोग लेता है। यह उसकी पतनावस्था है, गिरी हुई अवस्था है। हम उसकी ओर आपको संकेत नहीं करते, आपको तो उस जागृत अवस्था का संकेत कर रहे हैं जिसमें उस देवी भगवती का आर्विभाव होगा। उसका आनन्द विचित्र सा है। ध्यान में वह हाथ से स्पर्श करती है, गले में माला पहनाती हैं, एक नयी व्यवस्था देती है और वह क्या-क्या देती है, वह वाणी से व्यक्त करनी की वस्तु नहीं। उस दिव्य की बड़ी ही ऊँची अवस्था है। अन्त में आपने शक्ति साधना के महत्व को बताते हुए कहा कि शक्ति उपलब्ध कर लेने के बाद मातृ उपासना में प्रवृत्ति मिलेगी योग मिलेगा।

समाधि चित्त ही साधक की चरम उपलब्धि

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आश्रमवासी अनुष्ठान में लगे हैं। माँ की उपासना एक अलग चीज है और शक्ति की उपासना अलग। यंत्र मंत्र कठोर साधना आदि उपासना की चीजे हैं। माँ की उपासना में कठोरता नहीं। इस उपासना का मंत्र भी केवल माँ ही है।

जहाँ थोड़ी भी मनुष्य में भावना हुई मंत्र का लाभ होने लगता है। उसके उच्चारण से, स्वर से अपने आपमें गुदगुदी होने लगती है। जब तक अपने देव, ईश्वर, गुरु या इष्ट के प्रति भावना नहीं बनायी जाती, तब उसका लाभ मिलना कठिन है। इसीलिये कहा गया है, ''बिना विश्वास न एकौसिद्धि।'' जाप करते समय एक आसन हो, एक मुद्रा हो जिससे शरीर में तकलीफ न हो। जाप करते समय तन, मन हृदय सभी गुदगदा जाय, रोवें गनगना जाय। अपने में यह आभास करें कि उन सिद्धियों को अपने में पायेंगे तो उसी क्षण सभी इन्द्रियाँ अपने आप एकाग्र हो जाती हैं। चित्त सुनसान प्रसन्न हो जाता है। किसी तरह की कामना नहीं रहती। किसी तरह का हतोत्साह नहीं रहता। दीवाल पर लिखे हुए चित्र को सदृशवह व्यक्ति हो जाता है, समाधि चित्त। यदि महीना में दो चार बार भी यह अवस्था आ जाती है तो हमारी बहुत सी विघ्न बाधायें कट जायेंगी। बहुत सी आकांक्षायें उत्पन्न नहीं होंगी। बहुत सी आकांक्षाओं की पूत्रि हो जायेगी। बहुत सी त्रुटियाँ भी रास्ते पर आ जायेगी।

जब देवता प्रसन्न हो जाता है तो अपनी त्रुटियाँ सही हो जाती हैं यदि उसकी प्रसन्नता नहीं तो सही भी अमंगल हो जाता है। आप सबसे निवेदन करूँगा कि जब आप लोग जाप ध्यान, धारणा करते हैं तो इस तरह की भावना आपमें अवश्य हो। अपने गुरु साधना एवं मंत्र के प्रति दृढ़ विश्वास हो, दृढ़ निश्चय हो कि जिस आसन में बैठे हैं, उसको बार-बार पलटे नहीं मेरुदण्ड को खड़ा रखें। तब क्या होगा? सब वायुयें सब नस नाड़ियाँ अपने को सुखी अनुभव करेंगे। चित्त भी अपने को सुखी अनुभव करेगा। इन्द्रियाँ भी मृत तुल्य हो जायेंगी। अपने को कामना रहित, इच्छा आभास होगा। आप वह व्यक्ति सदैव के लिये, जन्म पर्यन्त के लिये अपने को सुखी अनुभव करता है।

आपने आगे कहा कि हमारा प्रयत्न यदि लगन और पवित्र निष्ठा के साथ आरम्भ होगा तो वह ईश्वरीय गुण, उस देवता का प्रभाव अपने हृदय में प्रारम्भ हो जाता है। उसकी भावनायें ऐसी पवित्र हो जाती हैं कि वह व्यक्ति गोबर उठाने वाली, लकड़ी चुनने वाली महिलाओं में उस देवी का दर्शन करता है। वह अनेक पुरुषों में अपने देवता का ही अनुभव करने लगता है, अनेक बच्चों की वाणियों में अपने इष्ट, अपने गुरु वाक्यों को प्राप्त करने लगता है। योग, समाधि या साधना का अन्तिम, पूरण लक्ष्य यही है। उसे जब यह प्राप्त होता है तो अपने आप आभासित होने लगता है। चलते, बैठते सोते हर समय उसका हृदय शान्त रहता हैं।

अब आप कहें कि जब ध्यान करते हैं तो हमारी चेष्टायें दूसरी तरफ जाती हैं। पर इस चेष्टा से कोई मतलब नहीं है। बहुत से लोग बहुत काम करते रहते हैं, बात करते रहते हैं पर उसकी अन्दरूनी चेष्टा दूसरी ही रहती हैं। वे बात भी कर लेते हैं और फिर कहते हैं- कहो भाई, क्या कहे। यह अभ्यन्तर से शान्त अवस्था हैं तो सबसे मुख्य अभ्यन्तर की चेष्टा है जब वह चेष्टा सही ढंग से हो रही है तो अपने इष्ट को ध्यान में देखेंगे कि वह मुझे प्यार कर रही है, मुझे आशीर्वाद दे रही हैं, मेरे नाना प्रकार के कर्म उनके स्पर्श मात्र से एक धुआँ को आकृति में आकाश में विलीन होते जा रहे हैं। इस निष्चेष्टा भाव से यदि अभ्यास होता रहे और उस समाधि चित्त का संयोग एक क्षण के लिये भी जाये तो सहस्रों वर्णों के पापों का विलीनीकरण हो जाता है। वह व्यक्ति सुख समृद्धि से घिरा रहता हैं। उसके मन में संकल्प होते ही सब साधन अपने आप मिलने लगते हैं।

गीता का वाक्य आपको याद ही होगा। कृष्ण ने कहा है—यज्ञानाम जपो यज्ञ: सौ अश्वमेध यज्ञ से बड़ा एक जप यज्ञ है। सौ अश्वमेध यज्ञ कोई व्यक्ति करता है और एक व्यक्ति अपने इष्ट मंत्र को जपता है, श्रद्धा और विश्वासपूर्वक तो उसे कई गुणा फल प्राप्त होगा, वह व्यक्ति आयुष्मान होगा, वीर्यवान, तेजमान और संकल्प सिद्ध होगा। हर एक विद्याओं में सिद्ध होगा।

जब तक हम साधना में हैं तब तक किसी तरह की शुद्धता, अशुद्धता किसी तरह के खान-पान, समय वक्त यहाँ तक की ब्रह्मचर्य तक का भी आवश्यकता नहीं। अगर उसका (ब्रह्मचर्य भंग का) जो नियम, वक्त है, उतने ही में हो रहा हो। उसका जो नियम, वक्त है, उतने ही उसका इस्तेमालहोना चाहियें यदि उसका अधिक से अधिक इस्तेमाल होने लगेगा तो यह सब गुण योग्यतायें आपसे दूर होने लग जायेंगें वे दूर न हो इसलिये इस प्रयोजन की आवश्यकता है कि आप ब्रह्मचर्य का पालन करें, शुद्धता रखे शरीर का प्रक्षालन करें, मन स्वस्थ रखें। इसलिये यह भी अपने जगह पर है। इसे एकदम परित्याग नहीं कर देना है। इसके लिये भी समय बंधी है। हर एक गृहस्थ अपने समय से कर सकता है और साधना के आनन्द को भी प्रापत कर सकता है।

पूज्य बाबा ने उस दिन आगे कहा कि ऐसा नहीं कि आप विरक्त होकर गंगा के किनारे चले जाये। आप भले ही चले जाय पर मन में लाखों कामनायें इच्छायें बनी रहेंगी तो चित्त शान्त नहीं होगा। इसलिये वह उपलब्धि नहीं होगी। बगल में बैठे हुए व्यक्तियों को समझ नहीं पायेंगे कि कौन है, क्या है क्योंकि हमारा चित्त ठीक नहीं है। तुलसीदास का वह वाक्य आपको याद ही होगा ''सकल पदारथ यहीं जग माही, कर्महीन नर पावत नाही।'' कर्महीनता का अर्थ है उस तरह की उसकी भावना नहीं होती, उस तरह लोगों के साथ नहीं होता। इसलिये वह व्यक्ति पशु की तरह जीवन बिताता है, पशु की ओर भागता है। पशुओं की तरह काम, क्रोध, मद, लोभ में लगारहता है। वह समझता है-खाना है, खाने के लिये जीना है, जीने के लिये कमाना हैं यह उसका धंधा लगा है। कमाना और जीने के लिये खाना इतना तो पशु पक्षी चिड़ियाँ चुरुँग सभी करते हैं।

पर मनुष्य का बड़ा ही ऊँचा कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्य को समझ कर चलने पर इन्द्र का सुख तुच्छ हो जाता है। बड़े-बड़े देवताओं के सुख तुच्छ हो जाते हैं, उस अभीष्ट के सामने ऐसे मनुष्य की सम बुद्धि हो जाती है, सबमें सम दृष्टि हो जाती है। सब में सम भावनायें हो जाती हैं। सबमें वह अपने आपका अवलोकन करता है। उसको कहीं कोई बाधा नहीं रहती। वह एक जीवन मुक्त महापुरुष की अवस्था में अपने को पाता है। वही खुश रहता है।

तो वह आपसे निवेदन करेंगे कि ब्रह्मचर्य, ध्यान, धारणा और समाधि का वह विमल अवस्था, आसन, प्राणायाम आदि क्रियाओं के द्वारा उपलब्ध करने में आपको लग जाना चाहिये। अभिभावकों से प्रेरणा लेकर। हमारे देवता, तो हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि साधक को अपने उस मुद्रा में देखें। जैसे कोई स्त्री नंगे अपने पति के सामने नहीं जाती है, कोई पुरुष नंगे अपनी पत्नी के सामने नहीं जाता है, उसी प्रकार शिष्य विचित्र रूप रेखा में अपने गुरु के पास नहीं जाता। जब वह उस मुद्रा, भावना और साधना में जायेगा तो उसका (गुरु का) आदुर्भाव होगा, उसका संकेत मिलेगा और वह संकल्प सिद्ध होगा, समाधि सिद्ध होगा। पुत्र पौत्र सभी घिरे रहेंगे, चर्चा करते रहेंगे फिर शान्ति का जागरण होता है।

यह सब शक्ति उपासना के बारे में इतनी बातें आपसे कहा हूँ। (मातृ उपासना के बारे में नहीं) शक्ति उपासना, शक्ति उपलब्ध करना, अधिकार उपलब्ध करना, मनुष्य का कर्त्तव्य है और इसे उपलब्ध करना चाहिये। यह हमारा विशेष अधिकार है, हमारे लिये रखा हुआ है और इसके लिये इन्हीं सब अनुष्ठानों की व्यवस्थाओं की आवश्यकता पड़ती है। नवरात्रि के बारे में आपने कहा कि साल में १२ नवरात्रि आते हैं पर दो नवरात्रि मुख्य माना गया है। (चैत नवरात्रि एवं अश्विन नवरात्रि) शास्त्रों में एक आषाढ़ की नवरात्रि भी मुख्य माना गया है। इन नवरात्रि में कुछ विशेष नक्षत्र अपने-अपने गति में परिणित होते हैं, कुछ दिशायें, कुछ भौगोलिक बनावट अपने-अपने कोष में, अपने-अपने घरों में प्रविष्ट होते हैं उनके उत्पात, क्षोभाक्षोभ व्याकुलता लाने वाली जो क्रियायें हैं, वो सब शान्त हो जाती हैं। मनुष्य के लिये ये एक बड़ा ही दार्शनिक, भौगोलिक नक्षत्र हैं। बड़ी ही अच्छी तरह उसके लिये काम करती हैं। वह भी उन मनुष्यों के लिये जो शुद्धाचरण में शक्ति एवं गुरु वाक्यों को प्राप्ति के

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ **हम जो पूजा-पाठ, ध्यान, धारणा करते हैं, नियमबद्ध होकर कर रहे हैं, वह व्यर्थ नहीं जाता। वह किसी न किसी रूप में हममें अवश्य फलवती होगा और उस महाप्रसाद को मैं प्राप्त करूँगा, उससे तृप्ति पाऊँगा और शान्ति पाऊँगा।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी